माननीय श्री राजदूत

FIND के प्रिय सदस्यों

और सारे भारतीय श्रोताओं को मेरा सादर अभिनंदन ,

हिन्दी बोल सकने की मेरी क्षमता बहुत ही सीमित है और इसलिए मेरा भाषण भी बहुत छोटा है, लेकिन मैंने आज इसी भाषा में बात करने का निश्चय किया, ताकि गणतंत्र दिवस के शुभ अवसर पर मैं भारत को अपनी और FIND की ओर से सम्मान अर्पित कर सकूँ।

भारत के प्रति मेरी श्रद्धा और सम्मान काफी हद तक व्यक्तिगत कारणों से है: योग परंपरा और भारतीय दर्शन का अध्ययन और पालन मैं बहुत सालों से करता आ रहा हूँ, जिसकी वजह से मेरे "पश्चिमी जीवनशैली" में बहुत बदलाव भी आया है। मैं संस्थान FIND का भी इसके लिए बहुत आभारी हूँ और आज उसके प्रतिनिधि के तौर पर उसके बारें में दो बातें कहना चाहूँगा। FIND के संस्थापक Alain Daniélou ["शिव शरण"] ने भारत में पच्चीस से भी ज्यादा वर्ष (दशक 1930 से 1960 तक) गुजारे और वहां की पारंपरिक जीवनशैली को अपनाया। यूरोप वापस आने के बाद भी उन्होंने अपना समय और ऊर्जा भारतीय संगीत, नृत्य, दर्शन और धर्म को प्रोत्साहन देने में और उनका विस्तार करने में लगाया। FIND का मुख्य उद्देश्य Alain Daniélou के काम को आगे बढ़ाना है, और इस तरह उनकी स्मृति, भारत के लिए उनका प्यार और सम्मान जीवित रखना है। और इसी कारण से आज हमें इस समारोह में भाग लेते हुए बहुत खुशी हो रही है।

आज हम सब यहाँ गणतंत्र दिवस मनाने के लिए इकट्ठा हुए हैं: 1950 में इस दिन भारत देश में संविधान लागू हुआ था। संविधान को देश का "सर्वोच्च कानून" माना जाता है। प्रतीकात्मक रूप से यह दिन बहुत महत्वशाली है, क्यूँकि इसका सम्बंध भारत की स्वतंत्रता से है, गणतंत्रता की धारणा से है और दुनिया में अन्य संप्रभु देशों के बीच आधुनिक भारत के रूप में अपनी नयी पहचान बनाने से है। लेकिन भारत में एक और "सर्वोच्च कानून" है: 'सनातन धर्म', जिसका आविष्कार किसी इंसान ने नहीं किया, बल्कि वो असंख्य वर्षो से वहां मौजूद है, और बिना किसी रूकावट के चलता चला आ रहा है।

आज हम एक ओर भारतीय गणतंत्र की उपलब्धियों को सम्मान देते हैं, जो कि भारत को ऐतिहासिक तौर पर एक विकसित देश का दर्जा देता है, और दूसरी ओर हम भारत की अलौकिक संस्कृति को भी सम्मान प्रदान करते हैं, जो कि अप्रतिम है और जिसको दुनिया के सारे धर्मों के उद्गम स्थल के रूप में मान्यता दी जानी चाहिए।

आपका बहुत बहुत धन्यवाद।